# उपसंहार

SHIVAJI UN...
LIBRARY
KOLHAPUR

# उ प सं हा र

आधुनिक हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में भगवतीचरण वर्मा का नाम उपन्यास विधा के लिए सर्वोत्तोमुखी हुआ है। उन्होंने लगभग चौदह उपन्यासों की सृजना की है। उसमें 'चित्रलेखा' उपन्यास सबसे महत्वपूर्ण रहा है। इस उपन्यास में वर्माजी ने अनेक सामाजिक समस्याओं का उद्घाटन भी किया है। भगवतीचरण वर्मा के 'चित्रलेखा' का अनुशीलन में उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व से लेकर 'चित्रलेखा' में अभिव्यक्त सामाजिक समस्याओं तक निष्कर्ष निकाले हैं।

भगवतीचरण वर्मा के सम्यक विधा साहित्य का अध्ययन करने के पश्चात हमारे सामने उनका साहित्यकारवाला, विशिष्ट व्यक्तित्व उभर आता है। उनकी समस्त रचनाओं में हमें व्यक्तिवादी मानव चेतना का स्वर मुखरित मिलता है। वर्माजी की आस्था 'फेन इन गुड' वाली है। यही वर्माजी के साहित्य में वह विशिष्टता पैदा हो गयी है ,जो हमें सर्वाधिक प्रभावित करती है। और यह विशिष्टता है उनका अत्याधिक यथार्थवादी दृष्टिकोण।

भगवतीचरण वर्मा जी ने साहित्यिक विधाओं के अंतर्गत किसी भी विधा को अछूता नहीं छोडा है। उनकी लेखन शैलीने विविध विधाओं को स्पर्श किया है। काव्य,कहानी,निबंध,चित्रलेख,नाटक और उपन्यास आदि विधाओं की सृजना की है। वर्माजी का साहित्य विचारोत्तेजक है विचार प्रधान नहीं। मनोरंजन की सृष्टि करना उनके कथा साहित्य का मुख्य ध्येय है। कहानीवाले तत्व को प्राथमिकता देने के कारण ही उनकी कहानीयों में हमें लघुत्व नहीं मिलता। उनमें विस्तार स्वयं हो गया है।

भगवती बाबू प्रेमचंद से जैनेन्द्र और यशपाल तक की एक महत्वपूर्ण कडी भी है और प्रेमचंद युग के बाद के पहले और मौलीक कथाकार। उपन्यास साहित्य में — उन्होंने प्रेमचंद के आदर्शवाद को मुक्त कराकर व्यक्ति-स्वातंत्र्य का संदेश दिया है।

संक्षेप में प्रेमचंद के पश्चात भागवतीचरण वर्मा जी ने हिन्दी साहित्यकाश में अपनी मौलीक साहित्यिक कृतियों के द्वारा चार चाँद लगाये हैं और साहित्य का भांडार उजागर किया है।

आधुनिक हिन्दी साहित्य में उपन्यास विधा एक देन है। उपन्यास के द्वारा लेखक मनोरंजन के साथ-साथ एक उद्देश्य तक पहुँचता है। उद्देश्य उपन्यास का महत्वपूर्ण अंग है। उपन्यास में लेखक अपनी दृष्टिकोण से सारे परिवेश पर लिख सकता है। भगवतीचरण वर्मा ने हिन्दी साहित्य में उपन्यासों का निर्माण कर अपना एक महत्वपूर्ण स्थान बना लिया है। `पतन` से लेकर `सबहिं नचावत राम गुसाईं` उपन्यासों में अलग - अलग विषय होकर भी वे एक दूसरे से घुल-मिल गये हैं। वास्तव में `चित्रलेखा` उपन्यास से ही भगवती बाबू ख्यातनाम हो गये हैं।

वर्माजी ने अपने उपन्यासों में जीवन के चित्र दिये हैं। उनके उपन्यासों में यथार्थवादी दृष्टिकोण एक विशिष्टता है,जो प्रभावित किये बिना नहीं रहता। वर्माजी के उपन्यासों में हमें समस्याओं का चित्रण दिखाई पडता है। `चित्रलेखा` उपन्यास में `पाप-पुण्य` जैसे गहन विषय की समस्या का निर्माण हुआ है। उद्देश्य को लेकर वर्माजी ने उपन्यास लिखे हैं।

अपने उपन्यासों में भगवती बाबू व्यक्ति की स्वतंत्रता का घोर समर्थन करते हुए दिखलाई पडते हैं। उन्होंने अपने उपन्यासों के माध्यम से नैतिकता के प्रचिलित मानदण्डो से अपनी स्वीकृति व्यक्त की है।`चित्रलेखा`,`तीन वर्ष`,`आखिरी दाँव`,`वह फिर नहीं आयी`,`रेखा` ये उपन्यास भगवती बाबू के नैतिकता संबंधी व्यक्तिगत दृष्टिकोण को सामने रखते हैं। उपन्यास और कहानीवाले तत्व को प्राथमिकता देने के कारण विचार पक्ष प्रबल होने पर भी,उनकी रचनाओं में उनका साहित्यिक व्यक्तित्व अलग उभरकर नहीं आया है। सोद्देश्य रचना होने के कारण वर्माजी की रचनाओं में कतिपय विशिष्टताएँ उत्पन्न हो गयी हैं। कथानक तथा पात्रों की संयोजना पूर्व-निश्चित रही है। मनोरंजन की सृष्टि करना उनके उपन्यास साहित्य का मुख्य है। भाषाशैली पर वर्माजी का पूरा अधिकार है। इस प्रकार हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते ही वर्माजी का उपन्यास साहित्य में महत्वपूर्ण योगदान रहा है।

भगवतीचरण वर्मा एक आस्थावादी कलाकार हैं, जो जीवन में सदाचार और संयम को सदैव प्रश्रय देते रहें हों, चाहे न परंतु अपने साहित्य में नैतिकता की अवहेलना नहीं करते और कुमारगिरि के माध्यम से लेखक ने अपने सांस्कृतिक मूल्यों की रक्षा की है। बीजगुप्त भोगी है लेकिन समय आने पर वह अपना सब कुछ श्वेतांक को अर्पित करता है।

`चित्रलेखा` ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर आधारित वर्माजी का एक सफल उपन्यास है। जिसमें पाप-पुण्य की परिभाषा करते हुए वर्माजी ने मौर्यकालीन अभिजात्य संस्कृति का चित्रण किया है। चित्रलेखा जो विधवा ब्राह्मणी है, बीजगुप्त पर मोहित है। कुमारगिरि का चित्रलेखा के जीवन में प्रवेश होते ही चित्रलेखा बीजगुप्त को छोडकर कुमारगिरि की ओर आकृष्ट होती है। लेकिन अंत में योगी भोगी बन जाता है तब चित्रलेखा पछताती है और वापस बीजगुप्त के पास आती है।

वेशभूषा, शृंगार प्रसाधन के साधन भी मन को मोहित करनेवाले हैं। चित्रलेखा एवं अन्य दासियों तथा राजा, दरबारियों के वेश-भुषा में भिन्नता है। आमोद-प्रमोद, क्रिडा एवं त्यौहारों के समय होनेवाले नृत्य, सारंगी और मृदंग तथा वीणा-वादन सांस्कृतिक मूल्यों की झाँकी प्रस्तुत करती है।

संक्षेप में कहा जा सकता है कि भगवतीचरण वर्माजी लिखित `चित्रलेखा` उपन्यास हिन्दी साहित्य में एक अमूल्य देन है जिसमें लेखक ने सांस्कृतिकता के विभिन्न पहलूओं को उजागर किया है।

भगवतीचरण वर्माजी के `चित्रलेखा` में भोगवाद के साथ-साथ नियति का कार्यकारण सम्बन्ध जोडकर प्रवृत्ति और निवृत्ति के द्वारा भारतीय कर्मवाद की स्थापना हुयी है। भगवती बाबू जिस भोगवाद का समर्थन करते हैं, वह उनके नियतिवाद का विश्वास का परिणाम है। उनकी मान्यता है कि मनुष्य परतंत्र है, परिस्थितियों का दास है, लक्ष्यहीन है। वह अज्ञात शक्ति से परिचलित है। मनुष्य की स्वेच्छा का कोई मूल्य नहीं है। अतएव स्वावलंबी नहीं है, कर्ता भी नहीं है अपितु साधन-मात्र है। स्पष्ट है कि मनुष्य जो कुछ आचरण करता है वह परिस्थितिगत होने के कारण स्वाभाविक है।

` चित्रलेखा` में वर्माजी ने बीजगुप्त,नर्तकी,चित्रलेखा,योगी कुमारगिरि के द्वारा दार्शनिकता को अभिव्यक्त किया है। भोगी बीजगुप्त अंतत: योगी बनना चाहता है। वह अपना सब कुछ श्वेतांक को दान करता है तो दूसरी ओर योगी कुमारगिरि चित्रलेखा पर मोहित होता है। वह चित्रलेखा को चाहता है यहाँ उसका पतन होता है। वह इस तरह निचे गिरकर भोगी बन जाता है। कुमारगिरि की असलियत मालूम होने पर चित्रलेखा बीजगुप्त को मिलना चाहती है। श्वेतांक का यशोधरा से विवाह होने पर बीजगुप्त के साथ चित्रलेखा भी चली जाती है। यह नियतिवाद कहीं भोगवादी दर्शन की अभिव्यक्ति करता है। इसप्रकार चित्रलेखा में दार्शनिकता भारतीय है,पाश्चात्य नहीं।

` चित्रलेखा` मूलत: दार्शनिक उपन्यास है और मनुष्य की आचरण सम्बन्धि व्याख्या करना इसका उद्देश्य है। लेखक ने आचरण के भिन्न - भिन्न सिध्दांतों जैसे प्रवृत्तिवाद,निवृत्तिवाद,आध्यात्मवाद,ईश्वर और अन्तरात्मा का विश्लेषण किया है। अंत में नवीनतम सिध्दांत है,जिसमें समाज की भलाई और उन्नति को ही सर्वोपरि बताया गया है।

` चित्रलेखा` बिल्कुल एक आचरण शास्त्र की पुस्तक जान पडती है। उसकी विशेषता यह है कि ऐसे रूखे विषय को इतने मनोरंजन रूप में वह प्रस्तुत करती है।

भगवतीचरण वर्माजी ने ` चित्रलेखा` के पात्रों का चयन तथा उनका चरित्र केवल कथानक की दृष्टि से नहीं किया है। चित्रलेखा के पात्र समस्या के विभिन्न पहलूओं को उजागर करते हैं। उपन्यास का प्रारंभ, विकास,अंत और पात्रों के स्वभाव एवं उनकी नियति सब कुछ पूर्वनिश्चित है। लेखक के लिए यह चुनौती होती है कि किसी ऐसे पूर्व नियोजित अभियान में वह पात्रों का सहज मानव के रूप में निर्माण कर लें। भगवती बाबू ने इस चुनौती का सफलता पूर्वक सामना किया है।

` चित्रलेखा` का प्रधान पात्र है नर्तकी चित्रलेखा। लगता है कि लेखक ने ` चित्रलेखा` के पात्र को ही महत्व देकर उपन्यास का निर्माण किया है। उपन्यास में प्रारंभ से अंत तक कथानक चित्रलेखा के कारण विकसित हुआ है। पूरे उपन्यास

की वह धुरी है। पात्रों में परस्पर विरोधी तत्वों का समावेश योग और भोग का द्वन्द्व प्रदर्शित करने के लिए किया गया है और इसका चित्रलेखा उत्तम उदाहरण है। चित्रलेखा भाव छिपाने से भी अत्यंत कुशल है। सबसे पहले अंतर्द्वन्द्व का आरंभ चित्रलेखा में ही होता है। प्रेम को विभिन्न स्तरों पर आधारित यह अंतर्द्वन्द्व दृष्टव्य होता है।

बीजगुप्त और कुमारगिरि का परिचय 'उपक्रमणिका' में दे दिया गया है, जिसके लिए श्वेतांक की जिज्ञासा को आधार बनाया गया है। वही रत्नाम्बर और विशालदेव समस्या के हेतू चित्रित किये गये हैं। यशोधरा एवं मृत्युंजय आदि शेष पात्रों को लेखक ने तब सामने लाया है,जब उपन्यास आठ परिच्छेदों की यात्रा तय कर चुका है। पात्रों की आवश्यकता होने पर ही परिचित करना लेखक की एक विशेषता दृष्टिगोचर होती है।

इस तरह भगवतीचरण वर्मा के पात्रों के चयन की यह विशेषता बन गयी है कि उन्होंने बीजगुप्त को महान दिखलाया है और चित्रलेखा को दुबर्लता से युक्त, फिर भी चित्रलेखा का व्यक्तित्व पाठक को प्रभावित किये बिना नहीं रहता। अत: हम यह कह सकते हैं कि 'चित्रलेखा' उपन्यास में सुंदरी चित्रलेखा ही महत्वपूर्ण एवं प्रधान पात्र है।

भारतीय समाज के परिवर्तनों को भगवती बाबू ने एक सजग व्यक्ति और सजग साहित्यकार की आँखों से देखा। प्रेमचंदोत्तर युग में जिन साहित्यकारों ने अपने उपन्यासों के माध्यम से सामाजिक समस्याओं को सामने रखा है,उनमें भगवती बाबू का स्थान अत्यंत उँचा है। यह एक ध्यान देने योग्य तथ्य है कि विचारों से व्यक्तिवादी होने पर भी उनके उपन्यासों में सामाजिक समस्याओं का चित्रण हुआ है।

भगवतीचरण वर्माजी ने 'चित्रलेखा' के माध्यम से सामाजिक समस्याओं की उद्घोषणा की है। नारी और विवाह की समस्या,अवैध प्रेम की समस्या,विधवा समस्या,वेश्या समस्या,घर-बाहर की समस्या और पाप-पुण्य की समस्या। इन सारी समस्याओं का 'चित्रलेखा' में चित्रण मिलता है।'चित्रलेखा' के द्वारा नारी और

विवाह की जो समस्या निर्माण हुयी है उसे सामन्त बीजगुप्त के द्वारा पुष्टि मिली है। चित्रलेखा जो विधवा ब्राह्मण युवती थी बाद में कृष्णादित्य के प्रेम में असफल हो जाने के बाद नर्तकी बन जाती है। उसी के साथ बीजगुप्त प्रेम करता है, यहाँ तक जिस नर्तकी का समाज में कोई स्थान नहीं होता उसे वह अपनी पत्नी के समान मानता है। अपने जीवन में वह किसी नारी के साथ विवाह नहीं करता। इस प्रकार भगवती बाबू ने नारी को महत्व देकर उसका समाज में स्थान बनाये रखने का प्रयास किया है।

`चित्रलेखा` में हमें अवैध प्रेम की समस्या भी दिखाई देती है। चित्रलेखा विधवा हो जाने के पश्चात भारतीय परम्परा के अनुसार अपना जीवन संयम से बिता रही थी। लेकिन कृष्णादित्य उसके जीवन में आने के कारण उसकी तपस्या भंग हो जाती है। चित्रलेखा और कृष्णादित्य के सम्बन्ध को समाज स्वीकार नहीं करता। कृष्णादित्य की मृत्यु के पश्चात चित्रलेखा नर्तकी बनती है और अपना जीवन बिताती है। फिर बिजगुप्त के साथ उसकी पत्नी बनकर रहना पसंद करती है। भगवतीचरण वर्माजी ने `चित्रलेखा` के माध्यम से यह स्पष्ट करने का प्रयास किया है कि समाज में नारियों का जो स्थान है अगर उनका शोषण होता रहे तो अवैध प्रेम की समस्याका निर्माण होता है।

`चित्रलेखा` में अभिव्यक्त विधवा समस्या, वेश्या समस्या, भी नारी जीवन की पहलुओं को प्रकट करती है। समाज में विधवाओं का कोई स्थान नहीं होता और इसलिए समाजद्वारा शोषित नारी वेश्या बनना स्वीकार करती है। भगवतीचरण वर्माजी ने `चित्रलेखा` के द्वारा यही समस्याएँ उजागर की है। उन्होंने `चित्रलेखा` को वेश्या नहीं माना है। वर्माजी ने वेश्याओं की समस्या को यथार्थवादी दृष्टिकोण से सहानुभूति के साथ प्रस्तुत किया है। समाज में नर्तकी अथवा वेश्या को हीन दृष्टि से देखा जाता था। लेकिन वर्माजी ने बिजगुप्त को चित्रलेखा से प्रेम दिखालाया है। घर बाहर की समस्या के अंतर्गत पुरुष वर्ग की मान्यताओं की स्वीकृति नहीं मिली है।

`चित्रलेखा` में सबसे महत्वपूर्ण समस्या रही है, पाप और पुण्य की। यह पाप-

पुण्य की समस्या प्रारंभ से अंत तक बनी रही है। हर एक पात्र अपनी अपनी दृष्टि से पाप और पुण्य बताते हैं। इसलिए 'चित्रलेखा' में भगवती बाबू का व्यक्तिवादी दर्शन मिलता है।

संक्षेप में भगवती बाबू ने 'चित्रलेखा' के द्वारा समाज में स्थित समस्याओं का निर्माण किया है, जो सामाजिक समस्या नारी बनती है उसे गिरने से बचाना चाहा है।

उपलब्धियाँ --

भगवतीचरण वर्मा के सम्यक विधा साहित्य का अध्ययन करने के पश्चात हमारे सामने उनका साहित्यकारवाला विशिष्ट व्यक्तित्व उभर आता है। उनकी समस्त रचनाओं में हमें व्यक्तिवादी चेतना का स्वर मुखरित मिलता है। वर्माजी की आस्था 'फेथ इन गुड' वाली थी। यही वर्माजी के साहित्य में विशिष्टता पैदा हो गयी है, जो हमें सर्वाधिक प्रभावित करती है और यह विशिष्टता है उनका अत्याधिक यथार्थवादी दृष्टिकोण।

'चित्रलेखा' ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर आधारित वर्माजी का एक सफल उपन्यास है, जिसमें पाप-पुण्य की परिभाषा करते हुए वर्माजी ने मौर्यकालीन अभिज्यात संस्कृति का चित्रण किया है। चित्रलेखा जो विधवा ब्राह्मणी है, बीजगुप्त पर मोहित है। कुमारगिरि का चित्रलेखा के जीवन में प्रवेश होते ही चित्रलेखा बीजगुप्त को छोडकर कुमारगिरि की ओर आकृष्ट होती है। लेकिन अंत में योगी भोगी बन जाता है तब चित्रलेखा पछताती है और वापस बीजगुप्त के पास आती है।

वेश-भुषा, शृंगार-प्रसाधन के साधन भी मन को मोहित करनेवाले हैं। चित्रलेखा एवं अन्य दासियों तथा राजा, दरबारियों के वेश-भुषा में भिन्नता है। आमोद-प्रमोद, क्रिडा एवं त्यौहारों के समय होनेवाले नृत्य, सारंगी और मृदंग तथा वीणा - वादन सांस्कृतिक मूल्यों की झाँकी प्रस्तुत करती है।

भगवतीचरण वर्माजी ने 'चित्रलेखा' के पात्रों का चयन तथा उनका चरित्र-

चित्रण केवल कथानक की दृष्टि से नहीं किया है । चित्रलेखा के पात्र समस्या के विभिन्न पहलुओं को उजागर करते हैं । उपन्यास का प्रारंभ,विकास,अंत और पात्रों के स्वभाव एवं उनकी नियति सब कुछ पूर्वनिश्चित है । लेखक के लिए यह चुनौती होती है कि किसी ऐसे पूर्वनियोजित अभियान में वह पात्रों का सहज मानव के रूप में निर्माण कर लें । भगवतीबाबू ने इस चुनौती का सफलतापूर्वक सामना किया है ।

` चित्रलेखा` का प्रधान पात्र है नर्तकी चित्रलेखा । लगता है कि लेखक ने ` चित्रलेखा` के पात्र को ही महत्व देकर उपन्यास का निर्माण किया है । उपन्यास के प्रारंभ से अंत तक कथानक चित्रलेखा के कारण विकसित हुआ है । पूरे उपन्यास की वह धुरी है । पात्रों में परस्पर विरोधी तत्वों का समावेश योग और भोग का द्वन्द्व प्रदर्शित करने के लिए किया गया है और चित्रलेखा इसका उत्तम उदाहरण है । चित्रलेखा भाव छिपाने से भी अत्यंत कुशल है । सबसे पहले अन्तर्द्वन्द्व का प्रारंभ चित्रलेखा में ही होता है ।प्रेम को विभिन्न स्तरों पर आधारित यह अन्तर्द्वन्द्व दृष्टव्य होता है ।

भगवतीचरण वर्मा जी ने` चित्रलेखा` के माध्यम से सामाजिक समस्याओं की उद्घोषणा की है । नारी और विवाह,अवैध प्रेम की समस्या,विधवा समस्या, वेश्या समस्या,घर-बाहर की समस्या और पाप-पुण्य की समस्या । इन सारी समस्याओं का ` चित्रलेखा` में चित्रण मिलता है ।

## संदर्भ ग्रन्थ सूची

### भगवतीचरण वर्मा का उपन्यास संसार ---

| १ | प्रथम प्रकाशन | प्रकाशक | संस्करण |
|---|---|---|---|
| १ 'पतन' | १९२९ | लोकभारती प्रकाशन | इलाहाबाद, १९७७ |
| २ 'चित्रलेखा' | १९३४ | भारती भंडार, लीडरप्रेस | इलाहाबाद, १९७९ |
| ३ 'तीन वर्ष' | १९३६ | भारती भंडार, लीडरप्रेस | इलाहाबाद, संवत २०२३ |
| ४ 'टेढे मेढे रास्ते' | १९४६ | | १९७९ |
| ५ 'आखिरी दाँव' | १९५० | राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली | १९८१ |
| ६ 'अपने खिलौने' | १९५७ | -,,- | १९८४ |
| ७ 'भूले बिसरे चित्र' | १९५९ | राजकमल प्रकाशनदिल्ली | १९८० |
| ८ 'वह फिर नहीं आयी' | १९६० | ,, | १९६९ |
| ९ 'सामर्थ्य और सीमा' | १९६२ | ,, | १९७५ |
| १० 'थके पाँव' | १९६३ | राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली | १९८१ |
| ११ 'रेखा' | १९६४ | राजकमल प्रका., दिल्ली | १९८१ |
| १२ 'सीधी सच्ची बातें' | १९६८ | ,, | १९७६ |
| १३ 'सबहिं नचावत राम गुँसाई' | १९७० | ,, | १९८१ |
| १४ 'प्रश्न और मारिचिका' | १९७३ | ,, | १९८१ |
| [illegible] | [illegible] | ,, | [illegible] |

...JI UNI... LIBRARY

१) अग्रवाल वीणा 'चित्रलेखा: सृजनात्मक अनुकृति' नचिकेता प्रका., नयी दिल्ली, प्रथम संस्क., १९८४

२) उदयमानुसिंह 'तुलसीदर्शन मिमसा,' प्रथम संस्करण.

३) गुप्त शांतिस्वरूप 'हिन्दी उपन्यास - महाकाव्य के स्वर'

४) चौधरी रामखेलावन 'चित्रलेखा - परिचय'

५) टंडन प्रतापनारायण 'उपन्यास कला' भार्गव भूषण प्रेस, वाराणसी, प्रथम संस्करण, १९६५

६) द्विवेदी हजारीप्रसाद 'विचार और वितर्क'

७) पाण्डेय अष्टभुज 'हिन्दी कहानी, शिल्प इतिहास'

८) पाण्डेय रामशकल 'साहित्य परिचय-शिक्षा और भारतीय संस्कृति विशेषांक संपादकिय'

९) प्रसाद जयशंकर 'कंकला' लीडर प्रेस, इलाहाबाद, दसवां संस्करण

१०) बख्शी पदुमलाल पुन्नालाल - 'हिन्दी कथा साहित्य' प्रथम संस्क., १९५४

११) बच्चन हरिवंशराय 'मधुशाला,' प्रकाशक, राजपाल एण्ड सन्स, कश्मीरी गेट, दिल्ली

१२) वर्मा भगवतीचरण 'साहित्यिक मान्यताएँ', १९६२

१३) वही 'मधुकण'. प्रथम संस्करण, १९३२

१४) वही 'रंगों से मोह प्रस्तावना', १९६२

१५) वही 'सविनय और एक नाराज कविता'

१६) वर्मा लक्ष्मीकान्त 'प्रेमचन्दोत्तर काल, नये धरातल, आलोचना उपन्यास अंक'

१६) वार्ष्णेय कुसुम — 'भगवतीचरण वर्मा: चित्रलेखा से सीधी-सच्ची बातें तक,' प्रकाशक साहित्य भवन, प्रा.लि., इलाहाबाद, प्रथम संस्करण १९६८

१७) वाजपेयी नंददुलारे — 'नया साहित्य, नये प्रश्न' प्रकाशक मैकमिलन कं. ऑफ इंडिया लि. दिल्ली, प्रथम संस्करण १९७६

१८) राजेन्द्र प्रसाद — 'साहित्य शिक्षा और संस्कृति'

१९) रामधारी सिंह दिनकर — 'संस्कृति के चार अध्याय, १९५५'

२०) शर्मा सारनामसिंह — 'साहित्य: सिध्दांत और समीक्षा,' प्रथम संस्क.,

२१) शुक्ल बैजनाथ प्रसाद — 'भगवतीचरण वर्मा के उपन्यासों में युगचेतना' से उध्दृत - कल्याण हिंदु संस्कृति विशेषांक प्रेम प्रकाशन, मंदिर, दिल्ली, प्रथम संस्करण, १९७७

२२) सिंह ब्रजनारायण — 'उपन्यासकार भगवतीचरण वर्मा'

२३) श्रीवास्तव रमाकांत — 'व्यक्तिवादी एवं नियतिवादी चेतना के संदर्भ में भगवतीचरण वर्मा': वाणी प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण, १९७७